भगवान

ज्ञान और वैराग्य

हेदर विलियम्स् द्वारा

‘दर्शन और मनन’ की गोष्ठी

शनिवार, २८ नवम्बर, २०२०

नमस्ते, भारत।

Aloha, उत्तर अमरीका।

Ciao, यूरोप।

Bienvenidos, लैटिन अमरीका।

Karibuni, अफ़्रीका।

Konnichiwa, एशिया।

मध्य-पूर्वी देशों को *As-salaam alaykum*।

इज़राइल को *Shalom*।

ये कुछ अभिवादन हैं जो विश्वभर के कुछ भागों में प्रयुक्त होते हैं जिनसे मैं परिचित हूँ। तथापि, सार्वभौमिक सिद्धयोग संघम् में *सभी को*, मैं अपने पूरे हृदय से अभिवादन करना चाहती हूँ।

सिद्धयोग अभ्यास ‘दर्शन और मनन’ की इस चौथी व अन्तिम सिद्धयोग गोष्ठी में आपका स्वागत है। आप सिद्धयोग वैश्विक हॉल में हैं। आप इस सीधे वीडिओ प्रसारण में भाग ले रहे हैं जो कि श्री मुक्तानन्द आश्रम स्थित भगवान नित्यानन्द मन्दिर से हो रहा है। यह सीधा वीडिओ प्रसारण एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन द्वारा निर्मित है।

कुछ सप्ताह पहले हमने इस नीलग्रह पर दीपावली का उत्सव मनाया। और जल्द ही—अमरीका में २९ नवम्बर और भारत में ३० नवम्बर को—देवी-देवता स्वर्ग में दीपावली मनाएँगे। भारत में इस पर्व को ‘देव दीवाली’ कहा जाता है।

गुरुमाई जी ने कहा है कि कभी-कभी ऐसा होता है कि उन्हें दिन के आरम्भ में यह स्मरण न हो कि उस दिन देव दीवाली है। किन्तु, दिन के अन्त में वे किसीसे कहती हैं, "यह दिन *बड़ा विशेष* महसूस हो रहा था। प्रकाश में कुछ तो था। हवा में बहने वाली ऊर्जा में कुछ तो था। मुझे लग रहा है कि निश्चित ही कहीं कुछ महान घट रहा होगा।"

३० नवम्बर को चन्द्र ग्रहण भी है। जैसा कि आप जानते हैं, ग्रहणकाल में व्यक्ति को सजग रहना चाहिए। सिद्धयोग पथ पर, हमारे गुरुओं ने हमें सिखाया है कि इस शक्तिपूरित कालावधि में सिद्धयोग अभ्यासों को करने का फल और भी महान होता है।

मेरा नाम हेदर विलियम्स् है। 'दर्शन और मनन' की इस गोष्ठी की सूत्रधार व वक्ता होते हुए मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है।

मेरे माता-पिता ने सिद्धयोग पथ का अनुसरण करने का निर्णय लिया, इसके लिए मैं उन्हें जितना धन्यवाद दूँ, कम ही है। मैं अपने आपको बहुत भाग्यशाली समझती हूँ कि अपने जीवनभर मैं सिद्धयोग की सिखावनियों का अभ्यास करती आई हूँ। श्रीगुरुमाई की सिखावनियाँ प्राप्त करना मेरी बचपन की विशेष स्मृतियों में है।

आज भी मुझे वह दृश्य याद है मानो कल ही की घटना हो :

> मैं एक छोटी बच्ची हूँ और अपनी परमप्रिय श्रीगुरु, गुरुमाई चिद्विलासानन्द के चरणों में बैठी हूँ।
>
> मैं ऊपर देखकर गुरुमाई जी को निहार रही हूँ और सोच रही हूँ, "वे बहुत सुन्दर हैं।"
>
> मैं उन्हें प्रवचन देते हुए सुन रही हूँ।
>
> वे जो कह रही हैं वह सब कुछ मेरी समझ में नहीं आ रहा है।
>
> फिर भी, मैं बड़े ध्यान से सुन रही हूँ।
>
> गुरुमाई जी के शब्दों की शक्ति मेरी सत्ता में प्रवेश कर रही है।
>
> मुझे अनुभव होता है कि गुरुमाई जी के शब्द मेरे शरीर की हर कोशिका में गूँज रहे हैं।
>
> जैसा कि मैंने कहा, वे जो कह रही हैं उसे मैं नहीं समझ रही हूँ। मैं एक बच्ची हूँ।
>
> फिर भी, मुझे महसूस हो रहा है कि उनके शब्द मेरे अणु-अणु में स्पन्दित हो रहे हैं।

मेरे अस्तित्व की संरचना और इसका स्वरूप गुरुमाई जी के इस मार्गदर्शन द्वारा आकार ले रहा है जिसे अब तक मैंने पूरी तरह समझा नहीं है।

मैं पहचान पा रही हूँ कि मेरे छोटे-से शरीर में कुछ ऐसा है जो बहुत विशेष है। फिर भी मैं ठीक-ठीक नहीं जानती कि वह क्या है।

और फिर मैं गुरुमाई जी को यह कहते हुए सुनती हूँ, "दिव्यता तुम्हारे अन्दर है।"

गुरुमाई जी के श्रीचरणों में बैठकर उनकी सिखावनियों से पूरी तरह मन्त्रमुग्ध हो जाने के अनुभवों ने मेरे जीवन को आकार दिया है और इसे मार्गदर्शित किया है। और अब, मुझे लगता है कि मैं समझ रही हूँ कि गुरुमाई जी क्या सिखा रही थीं और सिखा रही हैं। मुझे लगता है कि मैंने गुरुमाई जी से सीखा है कि जो कुछ भी मुझे सिद्धयोग पथ का अनुसरण करने से विचलित करे, ऐसी हर चीज़ से किस प्रकार मैं अनासक्त रहूँ।

श्रीगुरु के प्रेम के जैसा कुछ भी नहीं है। यही प्रेम आज हमें सिद्धयोग वैश्विक हॉल में एक-साथ ले आया है। यही वह प्रेम है जो हमारे शाश्वत सम्बन्ध को गढ़ता है व इसे बनाए रखता है। यही वह प्रेम है जिसे हम अपने तन, मन व आत्मा से पूजते हैं।

***

'दर्शन और मनन' की यह चौथी व अन्तिम सिद्धयोग गोष्ठी है।

इन गोष्ठियों में हमारे दर्शन व मनन के अभ्यास के लिए गुरुमाई जी ने केन्द्रण के रूप में 'भगवान' शब्द प्रदान किया है। संस्कृत शब्द 'भगवान' ईश्वर को दर्शाता है, यह इस ब्रह्माण्ड की परम शक्ति को और हमारे हृदय में बसे ईश्वर को दर्शाता है। 'भगवान' उन्हें भी सम्बोधित करता है जो छः दिव्य विभूतियों अथवा सद्गुणों को धारण किए हुए हैं और जो इन गुणों के साकार रूप हैं।

प्राचीन भारतीय शास्त्र, विष्णुपुराण के एक श्लोक में वर्णन किया गया है कि 'भगवान' के ये गुण कौन-से हैं। इस श्लोक का अर्थ है : "समग्र ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, ज्ञान और वैराग्य। साथ मिलकर, ये छः विभूतियाँ या सद्गुण 'भगवान' के मूल शब्दरूप की रचना करते हैं।"

'दर्शन और मनन' की इन गोष्ठियों में आपने 'भगवान' के चार गुणों के विषय में सीखा। आज मैं अन्तिम दो गुणों का अर्थ समझाऊँगी, जो हैं : ज्ञान और वैराग्य।

जैसा कि किसी भी भाषा में होता है, संस्कृत भाषा के शब्द अनेकार्थी होते हैं। अकसर एक शब्द के तीन, चार, पाँच—या इससे भी अधिक—अर्थ होते हैं। सच कहें तो 'ज्ञान' और 'वैराग्य'—इनमें से हर

शब्द के अनेक अर्थ हैं। तथापि, आज की गोष्ठी हेतु मैं इन्हें इस प्रकार परिभाषित करूँगी : 'ज्ञान' है, प्रज्ञान। और 'वैराग्य' है, अनासक्ति या त्याग।

ज्ञान

पहले मैं 'ज्ञान' के विषय में बताऊँगी। यह समझना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है कि इस सन्दर्भ में 'ज्ञान' से तात्पर्य मात्र जानकारी नहीं है। यह ज्ञान केवल वे तथ्य या सच्चाइयाँ व कल्पनाएँ नहीं हैं जिनके विषय में व्यक्ति पुस्तकों अथवा व्याख्यानों द्वारा सीखता है। यह शैक्षणिक ज्ञान नहीं है और न ही इसका अर्थ विद्वान या बहुपठित होना है।

ज्ञान गहनतर समझ का फल है, यह उन एकत्रित शिक्षाओं व अनुभवों को आत्मसात् करना है जिससे आन्तरिक रूपान्तरण होता है और आपके अन्दर करुणा का प्रकाश प्रज्वलित होता है। 'ज्ञान' मन व बुद्धि तक ही सीमित नहीं है; 'ज्ञान' आपकी सत्ता में स्वयं पैठ जाता है और जीवन के विषय में आपकी दृष्टि को आकार देता है।

हर क्षेत्र में ज्ञान अत्यावश्यक है। यह विशेषरूप से सच है जब आप एक आध्यात्मिक पथ पर हैं जहाँ आत्मा का ज्ञान दोनों है—यह लक्ष्य भी है और लक्ष्य तक पहुँचने का साधन भी है। आत्मा की प्रत्येक झलक जो आपको प्राप्त होती है वह आपको आत्मप्राप्ति की ओर अधिकाधिक अग्रसर करती जाती है।

'ज्ञान' का विरुद्धार्थी है, अज्ञान। भारत के ऋषि-मुनि व सन्तजन अज्ञान को पाप और महामूढ़ता मानते थे। शास्त्र हमें बताते हैं कि मानव-जीवन का उद्देश्य है, यह जानना कि हम कौन हैं। इसलिए, अपनी साधना के आरम्भ में एक साधक कुछ प्रश्न पूछता है। महान ऋषि आदि शंकराचार्य ने समझाया है कि ऐसे कुछ प्रश्न क्या हो सकते हैं। "मैं कौन हूँ? इस विश्व की उत्पत्ति कैसे हुई? इसका रचयिता कौन है? यह विश्व किस उपादान या पदार्थ से बना है?" ये शक्तिपूरित प्रश्न साधक के मन में, हृदय में और उसकी आत्मा में एक मन्थन का आरम्भ कर देते हैं। ये साधक को ज्ञान की खोज में ले जाते हैं, और कालान्तर में उस ज्ञान के प्राकट्य तक ले जाते हैं। यदि एक व्यक्ति इस खोज में नहीं लगता तो वह इस अनमोल सुअवसर को गँवा रहा है जो इस जीवन ने उसे प्रदान किया है।

ज्ञान में यह आवश्यक है कि इस जगत के स्वरूप को भी समझा जाए और परम आत्मा के स्वरूप को भी। भारत में चार महान योग हैं—ज्ञानयोग, भक्तियोग, कर्मयोग और राजयोग। विभिन्न प्रकार के सभी योग महत्त्वपूर्ण हैं। और इनमें ज्ञानयोग अर्थात् ज्ञानमार्ग को सर्वाधिक आदर दिया जाता है।

शास्त्रों में निहित ज्ञान असंख्य पृष्ठों में संकलित है। साथ ही, इन शास्त्रों की रचना करने वाले अनेक ऋषि-मुनियों ने, इन शास्त्रों को सिखाने वाले अनेक महात्माओं ने ऐसे संक्षिप्त वाक्यों में इस ज्ञान का सार बताया है जिन्हें आसानी से याद रखा जा सके।

उदाहरण के लिए, वेदों में महावाक्य हैं :

अहं ब्रह्मास्मि—मैं ब्रह्म हूँ।

अयं आत्मा ब्रह्म—आत्मा ब्रह्म है।

प्रज्ञानं ब्रह्म—प्रज्ञान ब्रह्म है।

तत्त्वमसि—तुम वह हो।

शिवसूत्र हैं, जिनमें शामिल हैं :

चैतन्यमात्मा—आत्मा चैतन्य है।

ज्ञानं बन्धः —सीमित ज्ञान बन्धन है।

प्रयत्नः साधकः —साधक वह है जो प्रयत्न करता है।

भगवान नित्यानन्द की, बाबा मुक्तानन्द की और गुरुमाई चिद्विलासानन्द की सिखावनियाँ हैं जो अत्यन्त सुस्पष्टता से शास्त्रों के ज्ञान का सार प्रकट करती हैं।

बड़े बाबा कहते हैं :

"सभी पवित्र तीर्थों का केन्द्र हृदय है। वहाँ जाओ और वहीं रमण करो।"

"सब ॐ।"

"शान्ति रखो—मैं हर एक स्थान में हूँ।"

बाबा जी कहते हैं :

"आपका सम्मान करो। आपको पूजो। आपको ध्याओ। आपका राम आपमें आप जैसा होकर रहता है।"

श्रीगुरुमाई कहती हैं :

"प्रेम ही मार्ग है।"

“मन को अपना मित्र बनाओ।”

“मैं वह हूँ। मैं सत्य हूँ। मैं ज्ञान हूँ। मैं अनन्त हूँ।”

भारत के शास्त्रों में वर्णन किया गया है कि ज्ञान का फल है, ‘सर्वं खल्विदं ब्रह्म’ का पूर्ण बोध। यह सब कुछ ब्रह्म ही है। यह सब कुछ ईश्वर है।

हम ऐसा क्यों मानते हैं कि भगवान नित्यानन्द ज्ञान के मूर्तरूप थे? सभी उन्हें प्यार से ‘बड़े बाबा’ कहते थे, वे ज्ञान की सदेह मूर्ति थे। उनकी हर भावमुद्रा से, उनके हर दृष्टिपात से, उनके मुख से निकले हर अक्षर से ज्ञानशक्ति प्रकट होती थी। उनके सान्निध्य में शान्त बैठने मात्र से साधकों को ज्ञानप्राप्ति होती। सिद्धयोग पथ पर हमने सीखा है कि साधक चाहे भौतिक रूप से श्रीगुरु के सन्निध हो, या श्रीगुरु का चिन्तन कर रहा हो, श्रीगुरु का छायाचित्र देख रहा हो या स्वप्न में श्रीगुरु के दर्शन कर रहा हो, उसके अन्दर आत्मज्ञान का उदय होता है।

वैराग्य

अब मैं ‘वैराग्य’ के विषय में बताऊँगी। ‘वैराग्य’ अर्थात् अनासक्ति या त्याग। संस्कृत में ‘वैराग्य’ शब्द की उत्पत्ति होती है ‘विराग’ शब्द से। ‘वि’ का अर्थ है ‘के बिना’ या ‘से रहित’ और ‘राग’ में शामिल हैं, सांसारिक मनोवेग, भावनाएँ, इच्छाएँ और आसक्तियाँ।

चूँकि ‘वैराग्य’ शब्द अनासक्ति व त्याग की ओर इंगित करता है, अतः लोग अकसर सोचते हैं कि यह गुण उनके लिए नहीं है। वे सोचते हैं, “मैं कोई संन्यासी नहीं हूँ। मैंने सांसारिक प्रपंच से अपने आपको मुक्त नहीं किया है।” तथापि, जैसे-जैसे मैं समझाती जाऊँगी कि ‘वैराग्य’ क्या है, आप जानेंगे कि ‘भगवान’ का यह गुण सभी के लिए कितना संगत है।

‘भगवान’ वे हैं जो ‘वैराग्य’ के दिव्य गुण को धारण किए हुए हैं। भारतीय शास्त्रों में इसे ‘निष्प्रपञ्च’ भी कहा गया है जिसका अर्थ है प्रपंच या सांसारिकता से मुक्ति। ‘भगवान’ वे हैं जो इस संसार में हैं पर संसार के नहीं हैं।

दुःख व कष्ट का, क्लेश व यातना का, निराशा और उदासी का कारण क्या है? भारतीय शास्त्रों के अनुसार इसका कारण है, किसी भी चीज़ को पकड़कर रखना : किसी विचार को, किसी व्यक्ति को, कल्पना को, वस्तु को, आदि-इत्यादि।

एक पुरानी कहानी है जो गुरुमाई जी ने सत्संगों व शक्तिपात ध्यान-शिविरों में सुनाई है, और वह कहानी इस बात को बिलकुल सटीक रूप में व्यक्त करती है। इस कहानी में एक बन्दर मिठाइयों से भरे एक बर्तन में बड़े जोश के साथ हाथ डालता है। समस्या यह है कि बन्दर जब मुट्ठी भरकर

मिठाइयाँ ले लेता है, तो वह बर्तन में से अपना हाथ बाहर निकाल नहीं पाता। जब तक वह सभी मिठाइयों को पकड़े रखता है, उसका हाथ बर्तन के अन्दर अटका रहता है। इसी प्रकार, अगर हम उसे पकड़कर रखें जो हमारे लिए अनुपयोगी है, या जो हमारे लिए अनावश्यक है तो इसमें नुकसान हमारा ही है। जब हम अपनी इस अपेक्षा को त्याग देते हैं कि हमारी कभी न ख़त्म होने वाली माँग, अत्यावश्यक लगने वाली इच्छा पूरी होनी ही चाहिए, केवल तब हम स्वतन्त्रता का, मुक्ति का अनुभव करते हैं और अपनी सत्ता की परिपूर्णता की अनुभूति कर सकते हैं।

जब गुरुमाई जी यह कहानी सुनाया करतीं, तो कभी-कभी वे अन्त में एक प्रश्न पूछतीं। अपना हाथ बाहर निकाल पाने के लिए अगर वह बन्दर बस कुछ मिठाइयों को छोड़ देता तो?

बड़े बाबा 'वैराग्य'—अनासक्ति या त्याग—के साकार रूप हैं, उसी प्रकार जैसे वे 'भगवान' के अन्य दिव्य गुणों के साकार रूप हैं। जो लोग बड़े बाबा के सान्निध्य में होते, वे हर रोज़ उनके वैराग्य का अनुभव करते। और भले ही वे हर दिन इसे देखते व अनुभव करते, भले ही वे जानते थे कि बड़े बाबा ऐसे हैं, फिर भी जब भी वे बड़े बाबा के वैराग्य का नया पहलू या नया रूप देखते तो इसका उनके मन पर अत्यन्त गहरा प्रभाव पड़ता। हर बार वह एक गहन अनुभव होता। आज भी, बड़े बाबा की पूर्ण अनासक्ति की अन्तर-स्थिति से साधक मन्त्रमुग्ध हो जाते हैं, वह स्थिति उनमें व्याप्त हो जाती है—चाहे वे उसे अपने हृदय में अनुभव कर रहे हों, या बड़े बाबा की तस्वीर देख रहे हों, उनके शब्दों को पढ़ रहे हों, उन पर ध्यान कर रहे हों, या फिर उनकी मूर्ति के समक्ष बैठे हों जैसे हम अभी, मन्दिर में बैठे हैं। संक्षेप में कहें तो, भगवान नित्यानन्द ईश्वर के साथ सदैव एकाकार हैं।

मैंने वह अद्‌भुत कहानी सुनी है कि गुरुदेव सिद्धपीठ में भगवान नित्यानन्द की मूर्ति—जिसकी प्रतिष्ठापना सन् १९७१ में हुई थी—का निर्माण कैसे हुआ था। जब मूर्ति बन रही थी तो बाबा मुक्तानन्द ने यह सुनिश्चित करने के लिए अत्यधिक ध्यान दिया था कि उनके श्रीगुरु के दिव्य गुण उस मूर्ति में झलकें। वे हर कुछ दिनों में मुम्बई में मूर्तिकार के स्टुडिओ जाते और देखते कि मूर्ति का कार्य कैसा चल रहा है। मूर्तिकार बाबा जी से पूछते कि क्या उन्होंने बड़े बाबा के भावों को अचूक रीति से मूर्ति में उतारा है, और अकसर बाबा जी स्वयं उस मूर्ति को गढ़ने का कार्य करते। बाबा जी का उद्देश्य था कि लोग जब भी बड़े बाबा की मूर्ति को देखें तो उन्हें वही अनुभूति हो जो बाबा जी को बड़े बाबा के सान्निध्य में होती थी। बाबा जी की इच्छा थी कि लोगों को उनके यानी बाबा जी के परमप्रिय श्रीगुरु की, उनके परमप्रिय सिद्ध, भगवान नित्यानन्द की अवस्था की अनुभूति हो।

इसलिए जब आप बड़े बाबा के स्वरूप को देखते हैं तो आपको इस वर्ष के लिए श्रीगुरुमाई के सन्देश का और भी स्पष्ट बोध व और भी अधिक प्रबल अनुभूति होती है : आत्मा की प्रशान्ति।

अब आप भगवान नित्यानन्द के देदीप्यमान और चैतन्यमय स्वरूप के दर्शन करने व उनके स्वरूप पर मनन करने के अभ्यास करेंगे।

जब आप इन अभ्यासों में निमग्न हों तब आप पियानो के शास्त्रीय संगीत के सुमधुर और सुकूनभरे स्वर सुनेंगे जिन्हें कार्लोस डेल क्योटो बजाएँगे। कार्लोस, एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन के स्टाफ़ सदस्य हैं और वे एक निपुण संगीतकार भी हैं।

सिद्धयोग वैश्विक हॉल में व्याप्त ध्वनि-तरंगों से अपने बोध को सम्बल प्राप्त करने दें। संगीत में वह शक्ति है कि वह अज्ञान को बेध देता है। संगीत में वह सामर्थ्य है कि यह आपको आसक्ति से मुक्त कर देता है। यह आपको आपकी अपनी चिन्ताओं व आत्म-बाधाओं से मुक्त कर देता है और आपके अन्दर एक बेहतर जगत को उजागर करता है।

***

प्रतिभागियों ने भगवान नित्यानन्द के सान्निध्य में दर्शन व मनन के अभ्यास किए। तत्पश्चात् हेदर ने समापन पंक्तियाँ कहीं।

ज्ञान और वैराग्य। दर्शन और मनन।

दर्शन और मनन। ज्ञान और वैराग्य।

‘दर्शन और मनन’ की इस चौथी व अन्तिम सिद्धयोग गोष्ठी में भाग लेने के लिए आप सभी का धन्यवाद।

मैं आपको स्मरण कराना चाहती हूँ कि ‘दर्शन और मनन’ की गोष्ठियों की सिखावनियाँ सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर उपलब्ध हैं। वेबसाइट को अवश्य देखें और दर्शन करें, मनन का अभ्यास करें। आप स्वयं के प्रति कृतज्ञ होंगे कि आपने अपनी साधना करने के लिए समय निकाला। और आप स्वयं इस बात की खोज करके देखें कि ऐसा करने के परिणामस्वरूप आपको कैसा बढ़िया महसूस होगा।

गुरुमाई जी, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। जब भी मैं सोचती हूँ कि आपकी सिखावनियों का और सिद्धयोग के अभ्यासों को करने का मुझ पर कैसा प्रभाव पड़ा है तो मुझे ऐसा लगता है कि मैं स्वर्ण का एक टुकड़ा हूँ जिसे बड़े ध्यान से परिष्कृत किया जा रहा है ताकि उसकी अन्तर्जात कान्ति और भी निखरे व उसका मूल्य और अधिक उजागर हो। आपकी व्यावहारिक और दार्शनिक परिदृष्टि के लिए धन्यवाद, आपके अनमोल व सहज मार्गदर्शन के लिए धन्यवाद, आपके कृपापूरित सान्निध्य के लिए धन्यवाद।

मैं सन्त-कवि ब्रह्मानन्द जी के एक भजन का ध्रुवपद गाकर श्रीगुरुमाई को अपनी कृतज्ञता और सभी की कृतज्ञता अर्पित करना चाहती हूँ; यह भजन मुझे बहुत प्रिय है। यह मेरा सद्भाग्य है कि मुझे सन् १९९९ में, *बिलवॅड*— इस सी.डी. के लिए गुरुमाई जी के साथ यह भजन गाने का सुअवसर प्राप्त हुआ था। जैसे गुरुमाई जी ने कहा, उन्होंने *बिलवॅड* को समर्पित किया है बीते हुए कल के बच्चों को, आज के बच्चों को और आने वाले कल के बच्चों को।

ब्रह्मानन्द जी कहते हैं : "गुरुचरणकमल बलिहारी रे। मेरे मन की दुविधा तारी रे।"—मैं श्रीगुरु के चरणकमलों में स्वयं को समर्पित करता हूँ जिनकी कृपा से मेरे मन का द्वैत दूर हुआ है।

सद्गुरुनाथ महाराज की जय!

© २०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।